पत्रिका patrika.com
भोपाल, मंगलवार, 29 अक्टूबर 2024


## साहित्य अकादमी का 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम

# मूल लेखन से बहुत ज्यादा कठिन है अनुवाद की यात्रा : खीमन यू मूलानी

पत्रिका Plus रिपोर्टर
patrika.com

भोपाल. मूल लेखन से कहीं अधिक कठिन है अनुवाद की यात्रा।अनेक बार अनुवाद करते समय कुछ क्षेत्रीय और आंचलिक शब्द अन्य भाषा में उपलब्ध नहीं होते। देश के प्रत्येक अंचल का खानपान, संस्कृति, वेशभूषा, शब्दावली और लोकाचार भिन्न होते हैं। इस नाते कई शब्दों का विकल्प लक्ष्य भाषा में नहीं प्राप्त होता। इस तरह अनुवाद सहज और भावानुवाद न होकर कई बार जटिल और शब्दानुवाद बन जाता है। यह कहना है सिंधी भाषा के वरिष्ठ लेखक और अनुवादक खीमन यू मूलानी का। सोमवार शाम वे भोपाल के संस्कृति भवन में साहित्य अकादमी, भारत सरकार के "लेखक से भेंट" कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। यह कार्यक्रम मध्यप्रदेश सिंधी साहित्य अकादमी के सहयोग से किया गया। लगभग पौन घंटे के आत्मकथ्य में लेखक ने बताया कि उन्होंने बचपन भी भोपाल में ही गुजारा है। पूरा जीवन साहित्य सृजन में बीता है। कुल 43 पुस्तक प्रकाशित हैं, जिसमें 34 पुस्तक सिंधी और हिंदी के परस्पर अनुवाद पर आधारित हैं। इनमें शायरी गजल, कविता, उपन्यास, कहानी, यात्रा संस्मरण और साक्षात्कार आदि शामिल हैं। युवावस्था से लेखन शुरू किया। उन्हें पत्र-पत्रिकाएं पढ़ने में रुचि थी। बाद में सिंधी का साहित्य उपलब्ध हुआ। इसके गहन अध्ययन के बाद अनुवाद की इच्छा जागृत हुई। हिंदी से सिंधी और सिंधी से हिंदी लगभग 500 रचनाओं के अनुवाद का कार्य संपन्न किया है।